आबूतीर्थ स्तवनावली।



न्यायाम्भोनिधि जैनाचार्य श्रीमद्विजयानन्दसूरि

श्री आत्मारामजी महाराज।

संग्रहकर्ता

बी. पी. सिंघि।

प्रकाशक—

हिन्दीसाहित्य कार्यालय, आबूरोड.

विक्र. सं. १९७६. वीर सं. २४४९.

मूल्य ०—२—०.

सद्गत प्रातःस्मणिय न्यायांम्भोनिधि

जैनाचार्य श्रीमद्विजयानन्दसूरि-

श्वरजी श्री आत्मारामजी माहा-

राजकी सेवामें समर्पण

आपका चरणोपासक



बी० पी० सिंघी.

आबू तीर्थराज स्तवन संग्रह ।

१

चालो चालोने राज, गिरिधर रमवा जइए—ए देशी

आवो आवोने राज,
श्री अर्बुदगिरि जइए ।
श्री जिनवरनी भक्ति करिने,
आतम निर्मल थइए ॥ आ० ॥
विमल वसइना प्रथम जिनेश्वर,
मुख निरखे सुख पइए ।
चंपक केतकी प्रमुख कुसुमवर,
कंठे टोडर ठवीए ॥ आ० १ ॥
जमणे पासे लूणवसइ,
श्रीनेमिसर नमीए ।
* राजिमति वर नयणे निरखी,
दुःख दोहग सवि गमिए ॥ आ० २ ॥
सिद्धाचल श्री ऋषभ जिनेश्वर,
रैवत नेम समरिए ।
अर्बुदगिरिनी यात्रा करतां,
चिहुं तीर्थ चित्त धरीए ॥ आ० ३ ॥

---

* राजिमतिका पूरा जीवन चारित्र राजिमति नामक पुस्तक मंगाकर देखे ।

मंडप मंडप विविध कोरणी,
निरखी हयडे ठरीए ।
श्रीजिनवरना बिंब निहाली,
नरभव सफलो करीए ॥ आ० ४ ॥
अविचल गढ आदीश्वर प्रणमी,
अशुभकर्म सवि हरिये ।
पास शांति निरखी जब नयणे,
मन मोह्यु डुंगरिये ॥ आ० ५ ॥
पाजे चढतां उजम वाधे,
जेम घोडे पाखरीए ।
सकल जिनेश्वर पूजीकेशर,
पाप पडल सविहरिये ॥ आ० ६ ॥
एक ध्यान प्रभुने ध्याता,
मन मांहि नवि डरीए ॥
ज्ञान विमल कहे प्रभुसुपसाय,
सकल संघ सुख करीए ॥ आ० ७ ॥
॥ इति ॥

२

चित्त चेतोरे—ए देशी

आदि जिनेश्वर पूजतां, दुःख मेटोरे ॥
आबुगढ द्रढचित्त, भवि जई भेटोरे ॥
देलवाडे देहरां नमी ॥ दुःख मेटोरे ॥
चार परिमित नित्य, भविजई भेटोरे ॥१॥

वीस गज बल पद्मावती ॥ दु० ॥
चक्रेश्वरी द्रव्य आण ॥ भ० ॥
शंख दिए अंबासुरी ॥ दु० ॥
पंश केश वहे थाणा ॥ भ० ॥ २ ॥
थार पादशाह जीतीने ॥ दु० ॥
विमल मंत्री आल्हाद ॥ भ० ॥
द्रव्यभरी धरती कीयो ॥ दु० ॥
रीषवदेव प्रासाद ॥ भ० ॥ ३ ॥
बिहुतर अधिका आटशे ॥ दु० ॥
बिंव प्रमाण कहाय ॥ भ० ॥
पन्नरशे कारिगरे ॥ दु० ॥
वर्ष त्रीके ते थाय ॥ भ० ॥ ४ ॥
द्रव्य अनोपम खरचियो ॥ दु० ॥
लाख त्रेपन बार कोडी ॥ भ० ॥
संवत दश अठयाशीए ॥ दु० ॥
प्रतिष्टा करी मन होडी ॥ भ० ॥ ५ ॥
* देराणी जेठाणीना गोखला ॥ दु० ॥

---

* देराणी जेठाणीका गोखला जो उसमें लिखा है वह गलत है क्योंकि दर असल वे देराणी जेठाणीके गोखले नहीं परन्तु दोनों सोतके नामसे बने है यह उन गोखलों पर लिखे हुए लेखसे साफ मालूम होता है। इसका पूरा वर्णन आबुतीर्थ गाइडमें देखे।

इन गोखलेकी अति उत्तम कारीगरीकी फोटू जिनको देखना हो मंगावे किमत रु. १-०-० है जो हिन्दी साहित्य कार्यालय आबुरोड़ से प्राप्त होती है।

लाख अढार प्रमाण ॥ भ० ॥
वस्तुपाल तेजपालनी ॥ दु० ॥
ए होइ एकांता जाण ॥ भ० ॥ ६ ॥
मूलनायक नेमीसुर ॥ दु० ॥
चारशे अडशट बिंब ॥ भ० ॥
ऋषभ धातुमयी देहरे ॥ दु० ॥
एकसो पिस्तालीश बिंब ॥ भ० ॥ ७ ॥
चौमुख चैत्य जुहारिये ॥ दु० ॥
काउसगीया गुणवंत ॥ भ० ॥
बाणुभित तेहमां कह्युं ॥ दु० ॥
अग न्यासी अरिहंत ॥ भ० ॥ ८ ॥
अचलगढे प्रभुजी घणा ॥ दु० ॥
जात्रा करो होशीयार ॥ भ० ॥
कोटि तपे फल जे लहे ॥ दु० ॥
ते प्रभु भक्ति विचार ॥ भ० ॥ ९ ॥
सालंबन निरालंबने ॥ दु० ॥
प्रभु ध्याने भवपार ॥ भ० ॥
मंगल लीला पामीए ॥ दु० ॥
वीर विजय जयकार ॥ भ० ॥ १० ॥

२

आबुगिरि राजनां देवल वखणाय छे,
मने देखी लवु देखी लवु थायछे ॥आबु०॥

संसारी उपाधि मने गमती रे नथी ।
देवल मां दिल तणायछे ॥ आबु० ॥१॥
देराणी जेठाणीना गोखला दिकनी ।
कोरणी अजब गणायछे ॥ आबु० ॥२॥
आदिनाथ नेमिनाथ तणावे ।
दुनियांमां देहेरा पंकायछे ॥ आबू० ॥३॥
अेहवा मिंदरना दर्शन करतां ।
पाप पाताले जायछे ॥ आबू० ॥४॥
त्रिजीरे वार इहां जात्रा करीने ।
हंस आनन्द अति पायछे ॥ आबू० ॥

४

(कोईलोपर्वत धुंधलोरे लो)

आबु अचल रळीयामणो रे लो,
दिलवाडे मनोहर; सुखकारीरे
वादलीएजे स्वर्ग शुरेलो,
देवल दीपे चार बलिहारीरे, भाव धरीने
भेटीएरे लो ॥ १ ॥

बार पादशाह वश कीयारे लो,
विमल मंत्रीसर सार; सु०
तेणे प्रासाद निपाइअेरे लो,
रिखभजी जगदाधार ॥ ब० भा० ॥ २ ॥

तेह चैत्यमां जिनवररे लो,
आठसेने बोतेर, सु०
जे दीठे प्रभु सांभरे लो,
मोह कर्यो जेणे जेर ॥ ब० । भा० ॥ ३ ॥

द्रव्य भावथी तिम वळीरे लो,
दिधी दत्तल काज; सु०
चैत्य तीहां मंडावीयुरे लो,
लेवा शिवपुर राज ॥ ब० । भा० ॥ ४ ॥

पंदरसे कारीगरोरे लो,
दीवीधरा प्रत्येक; सु० ॥
तेम मर्दनकारक वलीरे लो,
वस्तुपाल एविवेक ॥ ब० । भा० ॥ ५ ॥

कोरणी धोरणी तीहां करीरे लो,
दीठे बन ते वात; सु०
पण नवि जाए मुखे कहीरे लो,
सुरतरु सम विख्यात ॥ ब० । भा० ॥ ६ ॥

त्रणे वरसे नीपनोरेलो,
ते प्रसाद उत्तंग ॥ सु० ॥
बार क्रोडपन लक्षनेरेलो,
खरच्याद्रव्य उछरंग ब० । भा० ॥ ७ ॥

देराणी जेठाणीना गोखलारेलो,
देखतां हरषत थाय, सु०

लाख अढारज खरचीयारेलो,
मन धन एनीमाय ॥ ब० । भा० ॥ ८ ॥
मूलनायक नेमीसरूरेलो,
जनम थकी ब्रह्मचार; ॥ सु० ॥
निज सत्ता रमणी थयोरेलो,
गुण अनंत आधार । ब० । भा० ॥ ९ ॥
चारसेंने अडसठ भलारेलो,
जिनवर बिंब विशाल ॥ सु० ॥
आज भले अमे भेटीयारेलो,
पाप गया पाताल । ब० । भा० ॥ १० ॥
रिखभ धातुमय देहरेरेलो,
एक सो पिसतालिशे बिंब ।
चोमुख चैत्य जुहारीएरलो,
मरुधरमां जेम अंब । ब० । भा० ॥ ११ ॥
बाणु काउस्सग्गिया तेहमांरेलो,
ओगणाशी जिराय ।
अचलगढ बहु जिनवरारेलो,
वंदु तेनी पाय । ब० । भा० ॥ १२ ॥
धातु मय परमेश्वरारेलो,
अद्‌भूत जस स्वरूप । सु०
चौमुख जिनने वंदतां रेलो,
थाए निजगुण भूप । ब० । भा० ॥ १३ ॥

अढारसे ने अढारमां रे लो,
चैत्र वदि त्रीज दिन । सु०
पालनपुरना संघ शुरेलो, प्रणमी
थयो धन धन । व० । भी० ॥१४॥
तेम शांति जगदीशरुरेलो,
जात्राकरी, अद्भूत ॥ सु०
जे देखी जिन मांभरे रेलो,
सेवा करे पुरहुत । व० ।भी० ॥१५॥
अेम जाणी आबु तणीरे लो,
जात्रा करशे जेह । सु० ।
जिन उत्तम पद पामशेरे लो,
पद्म विजय कहे तेह । व० । भ० ॥१६॥

५

(गरबाकी देशी)

हुं तो सिमरूं सदा आबूराजने जो ।
छोडी काम अने वळी काजने जो ॥ हुं तो १॥
आबू तीरथ अति रलियामणो जो ।
पूरे मनना मनोरथ गाजने जो ॥ हुं तो० १ ॥
देलवाडे देरासर चार छे जो ।
ऋषभ देवजी सुधार काजने जो ॥ हुं तो० ३॥
नेम नाथ स्वामीने सेवियें जो ।
जावे मदन कदन बल भाजने जो ॥ हुं तो० ४॥

देराणी जेठाणीना गोखला जो ।
जोइ मननी टले सहु खाजने जो ॥ हुं तो० ५॥
श्री रिषभ धातुमय देहरा जो ।
नमु चौमुख चार जिनराजने जो ॥ हुं तो० ६॥
गढ अचलमें देवल दीपतुं जो ।
वांदु ऋषभ गरीब निवाजने जो ॥ हुं तो० ७॥
शांतिनाथ प्रभू करे शांतिने जो ।
चूर अष्ट कर्म समाजने जो ॥ हुं तो० ८॥
प्रभु महावीर ओरिया गाममे जो ।
नमुं शासनपति शिरताजने जो ॥ हुं तो० ९॥
प्रभु नामथी धामने वंदना जो ।
जग तीरथ तारण जहाजने जो ॥ हुं तो० १०॥
भेट्यो तीर्थ आतम पावनो जो ।
तारो वल्लभ सेवक अपाजने जो ॥ हुं तो० ११॥
संवत ओगणीसो छासठ जेठनो जो ।
गुरुवार अष्टमी धन्य आजनो जो ॥ हुं तो० ॥ १२॥

६

(मल्ली जिनराजजी व्रत लीजेरे एदेशी)

सेवो भवि आदिनाथ जगत्रातारे,
आबू मंडल सुखदाता सेवो० अं० ।

प्रभुचार निक्षेपे सोहेरे,
नाम स्थापन द्रव्य भाव मोहेरे ।
तत्व सम्यक् द्राष्टि बोहे ॥सेवो० १ ॥
प्रभु नाम नाम जिन कहियेरे,
स्थापना जिन पाडिमा लहियेरे ।
द्रव्य जीव जिनेश्वर गहिये ॥ सेवो० २ ॥
समवसरणमें भाव जिनंदारे,
शोभे उडुगणमे जिम चंदारे
टारे जन्म मरण भव फंदा ॥ सेवो० ॥ ३ ॥
प्रभुमूर्ति प्रभु सम जानीरे,
अंगीकार करे शुभ ध्यानीरे ।
एतो मोक्ष तणी छे निशानी ॥ सेवो० ४ ॥
नही हाथ धरे जप माळारे,
नही नाटक मोहना चालारे ।
प्रभु निर्मल दीन दयाला ॥ सेवो० ॥ ५ ॥
नहीं शस्त्र नही संग नारीरे,
प्रभु वीतराग अविकारीरे ।
जग जीव तणा हितकारीरे ॥ सेवो० ॥ ६ ॥
मुद्रा प्रभु शांत सुधारीरे,
आतम आनंद सुखकारीरे
वल्लभ मन हर्ष अपारी ॥ सेवो० ॥ ७ ॥

८२५८०

७

दोहा

विमलाचल करवा भणी, अरबुध अचल सुमेर,
विमल वसइ जिनवंदीये, आठसें बइयोतेर,
समकित छ हरी धारीने, किजे अरबुधजात;
विमल वसइ जिनवंदीये, आदिश्वर विख्यात ॥१॥
विमलातम करवां भणी, अरबुध अचल सुमेर,
लुणग वसइ जिन वंदीये, चारसे अडसठ ठेर,
समकित छ हरीने, किजे अरबुध जात;
लुणग वसइ जिनवंदीये, नेमिसर विख्यात ॥२॥
विमलातम करवां भणी, अरबुध अचल सुमेर,
भेंसा मंदिर वंदीये, एक सो पिस्तालीस हेर,
समकित छहरी धारीने, किजे अरबुध जात;
भेंसा वसइ नित्य वंदीये, प्रथमाजिन प्रख्यात ॥३॥
विमलातम करवां भणी, अरबुध अचल सुमेर,
चउमुख चैत्ये वंदीये, एक सो इकोत्तर,
समकित छहरी धारीने, किजे अरबुध जात;
चउमुख चैत्ये वंदीये, पारस नाथ विख्यात ॥४॥
विमलातम करवां भणी, अरबुध अचल सुमेर,
अचलगढे जिन वंदीये, दोयसें ने ववीतेर,
समकित छहरी धारीने, किजे अरबुधजात;
अचल गढे जिन वंदीये, आदिश्वर विख्यात ॥५॥

८

(देशी–जिनवर पास पियारो फलोधी वावोरे)

जिनवर ऋषभ पियारो, ऋषभ पियारो मोहन
मारो आबू वारोरे के जिनवर० अंचली ॥
चमत्कार चंद्रोदयेरे
वारी पडियो लागन सतारोरे के जि० ॥१॥
हीरा लाल मोती लडे रे
वारी छत्र करत छनकारो रे के जि० ॥२॥
मणिमंडल मंडित कार्यो रं
वारी मुगट करत झलकारा रे के जि० ॥३॥
चंद्र सूर कर्पूर कोरे
वारी रसकस मुख पर सारो रे के जि ॥०४॥
संवत् निधि शशी बावने रे
कांइ फागण शुक्ल जुहारो रे के जि० ॥५॥
कांति विजय पद दीजिये रे
कांइ नाथ न होजो न्यारे रे के जि० ॥६॥

९

(देशी पनीहारी–मारवाडी)

आबू अचल निर्मल भलो मारो वालाजीरे,
देलवाडो दिलदार स्वर्ग विसार वालाजी ।
नेमि निरंजन नाथ मु मारा०,
चैत्या अति मनोहार बोधि कार वालाजी ॥१॥

मृगपति आसन शोभ तो मारा०,
त्रिभुवन तारण हार गिरि शृंगार वालाजी ।
शांति समाधि रस भर्यो मारा,
समरसनो दातार धर्माधार वालाजी ॥ २ ॥
पूरण पुण्य पामीयो मारा०
कर करुणा महाराज शिवपुरसाज वालाजी
पंचम आरे प्राणीनां मारा०
क्यूं कर सरसे काज राखो लाज वालाजी ॥३॥
राजिमती रथने मिजी मारा०
ज्युं दीधो आधार त्युं मुझ तार वालाजी
पशु पर तुमे करुणा करी मारा०
मुजपर क्युं न लगार टलवलुं द्वारा वालाजी ॥४॥
यदुपति नंदन वंदना मारा०
चंदन शीत शरीर योगी वीर वालाजी
कांतिविजय कर दीजिए मारा०
जावे जंगम पार भांगे भीर वालाजी ॥५॥

१०

(प्रभाति-देशी-विमलाचल नितु वदिए)

नयने अचलगिरि निरखियो,
मन अति हरखायो ।
मानुं परमाणु पुण्यनो,
ए पुंज रचायो न० ॥ १ ॥

मरु देवी नंदन मंडनो,
जस किरसि सुहायो।
मेरु चतुर्दशी रूपथी,
मानु मिलनको आयो ॥ २ ॥
ऊर्ध्वगति ध्वज देखिवे,
जो वंदन आये।
सुगतिपुरि आरो हुवा,
सोपान सोहावे ॥ ३ ॥
सिद्धि वधुवर मंडप,
घट कंचन केरो।
चउ गति चूरण चौमुखो,
टाले भवफेरो न० ॥ ४ ॥
दूर्गति दूर्मति दुष्कृति,
करुणा कर वारो।
सुरतरू आंगणमें फल्यो,
जरा कांति निहारो न० ॥ ५ ॥

११

आबु तीर्थ स्तुति.

जय नाभी नंदन त्रिजग वंदन तीर्थ अर्बुध मंडणं,
परभाव रोधन तत्व शोधन कर्म अरि दल खंडणं;
कलयंती कमला कला जसघर ध्येय ध्याता वंदणं
जग जंतु तारण दुःख वारण मोह मल्ल विदंडणं॥१॥
सकल संपति दान समरथ सिद्ध साधन जिनवरा,
तिर्थ सघला जेह जगमें सकल कलीमल दुखहरा,
जसु सेव सारे प्रवर सुखर प्रेम प्रीती भवधरा,
त्रीहुं लोक मांहे जैन तीरथ वंदो पूजो भविवरा॥२॥
आमुल्ल चुल्ला अर्थ बहुला विधि रचना लियकरी,
विरुध रचना विचार वराजित समय सिंधुमां भारी;
जसु मांहि प्रमणे सूरि राजेन्द्र जैन ठवणा जयकारी
भज वरज शंका नहीय कंख्या धनसु मुनिजन
आदरी॥३॥

दर्शन करने योग्य प्राचिन जैन तीर्थ।

सर्व जैन बन्धुओको निवेदन है कि बामणवाडजी जैनोंका महान प्राचीन तीर्थ स्थान है। यहांका चमत्कार इस कदर है कि जिसको अन्यधर्मी तक बडी जिज्ञासा एवं उत्कंठासे दर्शन करने आते हैं। मन्दिरमें बावन जिनालय है, मूल नायक श्री महावीर स्वामी हैं, मूर्ति बालूकी है। मंदिरके चारों ओर पक्की चार दिवारी खिची हुई है। अन्दर विशाल धर्मशाला है जिसमें हजारो जात्री आराम कर सकते है। सर्व प्रकारका आराम है। यहां की आब हवा इतनी तो अच्छी है कि जिसकी तारीफ करनेके बजाए दो चार दिन रहनेसे ही अनुभव होता है। जिन भाइयोंको अगर अपना स्वास्थ्य सुधारना हो इस तीर्थको जरूर भेटे एक पन्थ दो काज है। यह जगह राजपुताना-मालवा रेल्वे (R. M. R.) लाइनके पिंडवारा स्टेशनसे मात्र चार माईल दूर है। स्टेशनसे बामणवाडजी जानेके लिये बैलगाड़ी, ऊंट आदिकी स्वारी मिलती हैं। जो महाशय तीन दिन पेश्तर अगर बामणवाडजीके मैनेजरको स्वारीके वास्ते खबर दे तो वह सब इंतजाम कर देगा।

हिन्दी साहित्य ग्रन्थावली।

सर्व सज्जनोंको विदित हो कि हमने "हिन्दीसाहित्यग्रन्थावली" निकालना प्रारंभ कर दिया है। इसमें प्रत्येक मासके आखिरमें एक २ प्रति अति उत्तम पुस्तक हिन्दी भाषामें प्रकाशित होगी। यदि आप हिन्दी साहित्यकी सेवा करना चाहते हैं; यदि आप घर बैठे महात्मा पुरुषों तथा सती महिलाओंकी जीवनीएं पढ़ना चाहते हैं; यदि आप भिन्न २ धर्मशास्त्रोंका आशय जानना चाहते हैं, यदि आप तत्वका रहस्य लूटना चाहते हैं; यदि आप अपने गृहस्थाश्रमको आदर्श बनाना चाहते हैं; यदि आप उद्योगी जीवन व्यतीत करना चाहते हैं; यदि आप अपना स्वास्थ्य अच्छा रखना चाहते हैं; यदि आप पश्चिमी देशोंकी अद्भुत कला व सायन्स जानना चाहते हैं और यदि आप देशका कल्याण चाहते हैं तो उपरोक्त ग्रन्थावलीसे प्रकाशित प्रत्येक पुस्तकका अवलोकन करें। एक वार अवश्य इस ग्रन्थावलीके ग्राहक बन कर अपूर्व लाभ, मात्र नामकी फीस रु. २) भेज कर उठावें। इस ग्रन्थावलीके अब तक चार ग्रन्थ प्रकट हो चुके है जिसका हिन्दी साहित्य प्रेमीयोंने अच्छा आदर किया है। एक वार इसके ग्राहक होकर अपूर्व लाभ उठाकर देखे।

पता:-मैनेजर-**हिन्दी साहित्य कार्यालय आबूरोड़**

प्रकाशक-**बी. पी. मिस्त्री-आबुरोड़।**

मुद्रक-**इश्वरलाल किसनदास कापड़िया** "जैन विजय" प्री. प्रेस खपाटिया चकला, लक्ष्मीनारायणकी वाडी-**सूरत।**